संवित् संकीर्तन सार

परिशिष्ट

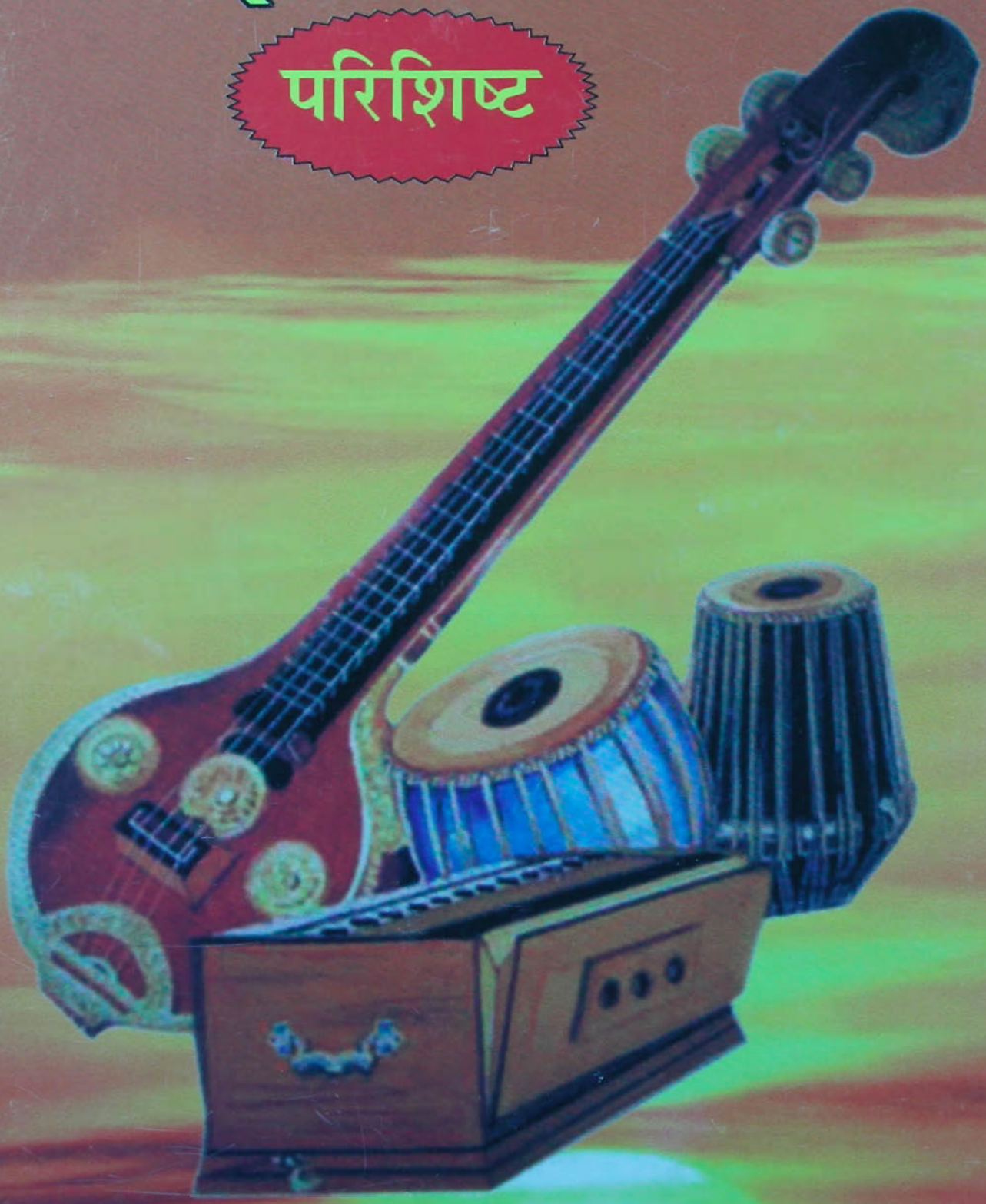

संवित् साधनायन

समर्पण

स्व. श्रीमती सुशीला गुप्ता

धर्मपत्नी श्री कल्याण गुप्ता (जालोर)

की पावन स्मृति में

जन्म : 03.09.1963 देवलोक : 01.04.2007

संवित् संकीर्तन सार
परिशिष्ट

संवित् सभा एवं गुरुपूर्णिमा आदि
महोत्सवों में प्रकाशित व प्रचलित
संकीर्तन का परिशिष्ट

तन्मयो भवेत्

स्वामी श्री ईश्वरानन्द गिरि

प्रकाशक
संवित् साधनायन,
संतसरोवर, आबू पर्वत

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 25 रूपये मात्र

परिशिष्ट संस्करण : श्री गुरुपूर्णिमा 2012

प्रायोजक - श्री कल्याणजी गुप्ता (जालोर)

मुद्रक :
अनिल कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स
जालोरी गेट, जोधपुर

अनुक्रमणिका

विषय विन्यास	पृष्ठ
गुरुकीर्तन	
श्रीगुरुप्रांगण आरती	1
शिव कीर्तन	
प्रभास-क्षेत्र-वन्दना	3
रामेश्वर भजन	4
सा काशिकाहं	5
श्रीमल्लिकार्जुन गीतम्	6
अर्द्धनारीश्वर भजन	7
वैद्यनाथ भजन	8
वैद्यनाथ प्रार्थना	9
महाकाल नाम स्मरण	10

विविध देवता कीर्तन

श्री वागीश्वरी भजन

श्री कृष्ण भजन

नारायण जय नारायण

जय पुरुषोत्तम

सूर्य कीर्तन

पंचभूत शुद्धि

ज्ञानेश्वर हनुमान भजन

शिष्य प्रार्थना

अमृत सेतु

श्री वेदव्यास कीर्तन

वेदान्त चालीसा

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय...

गुरु कीर्तन

श्रीगुरुप्रांगण आरती

आरती गुरुप्रांगण संस्थापित गुरुग्राम की।
सर्वगुरु स्वरूप दक्षिणामूर्तिधाम की ।।ध्रुव।।
प्रथम परम पुरुषोत्तम हरिपद पद्मा की।
नाभिकमल राजित चतुरानन ब्रह्मा की।
ब्रह्ममानसोद्भूत सप्तऋषिगणों की।
अत्रिपुत्र दत्त प्रमुख सिद्धगुरुजनों की ।।1।।

ब्रह्मनिष्ठ ऋषिवसिष्ठ ब्रह्मप्राणजात की।
तत् पत्नि सतीरत्न अरुन्धती मात की।
वेदमन्त्र-द्रष्टा श्री शक्तिपूज्यपाद की।
शक्तिपुत्र महावीर्य पराशर महर्षि की ।।2।।

शक्तिपात शतसमर्थ सकलशास्त्र सृजन की।
सत्यवतीतनय व्यास भारत-भगवान की।
व्यासशिष्य जैमिनिमुख कृतधर्मविधान की।
व्यासपुत्र शुकदेव देह-निरभिमान की ।।3।।

शुकशिष्य गौडपाद कारिकाकार की।
गोविन्दपाद आदि-शेषावतार की।
तत्शिष्य परमपूज्य श्रीभाष्यकार की।
संवित्पथ संदर्शक शंकरावतार की ।।4।।

पद्मपाद - प्रमुख - शिष्यपरंपराचार्य की।
परमगुरु श्रीनृसिंह-गिरिपादाचार्य की।
प्रत्यक्ष परमहंस यतीश्वराचार्य की।
प्रत्यक्ष संविद्गुरु परंपराचार्य की ।।5।।

शिव कीर्तन

प्रभास-क्षेत्र-वन्दना

जय सोमनाथ-प्रिय स्वप्रकाश।
जय भारतप्राण वसुधावकाश ।। ध्रुव ।।

श्रीकृष्णलीला-विलयालयाय।
सरिता-सागर-संगमाय प्रणामः ।।1 ।।

श्रीशंकराचार्य-नुतपुण्यकीर्ते।
शतदैत्यघाताविघटितात्मभूते ।।2 ।।

शशिशापमोक्षाय धृतदीक्षागुरवे।
शिवभक्तिफलसिद्धये नमः कल्पतरवे ।।3 ।।

कैलास-समदेवगृहशोभिताय।
श्रीराष्ट्रधाम्ने शतशः प्रणामः ।।4 ।।

रामेश्वर भजन

रामेश्वरं भज रामेश्वरम्
रघुनाथ-नाथ रामेश्वरम् ।।ध्रुव।।

दुर्गार्णव-भव-सेतुनिबन्धम्
दुरित-विजय-वरदान प्रसिद्धम् ।।1।।
पावन तीर्थ-शतावृत क्षेत्रं
पर्वतवर्धिन्याश्लिष्टगात्रं
सागर कल्लोल ह्रींकारलोलं
संवित्-परायण-जनपरिपालम् ।।2।।

सा काशिकाहं

महाश्मशान-मानन्द-वनं वाराणसीमहम्।
काशिकामविमुक्ताख्यं विश्वेश्वरपुरीं भजे।।
योगत्रयं शिवकरे त्रिशूलं त्रिमलापहम्।
यदग्रे मोक्षदा काशी राजते संविदात्मिका।।

मनोनिवृत्तिः परमोपशान्तिः
सा तीर्थवर्या मणिकर्णिका च।
ज्ञान प्रवाहा विमलातिगंगा
सा काशिकाहं निजबोधरूपा ।।1।।

यस्यामिदं कल्पितमिन्द्रजालं
चराचरं भाति मनोविलासम्।
सच्चित् सुखैका परमात्मरूपा
सा काशिकाहं निजबोधरूपा ।।2।।

कोशेषु पंचस्वधिराजमाना
बुद्धिर्भवानी प्रतिदेहगेहम्।
साक्षी शिवः सर्वगतोन्तरात्मा
सा काशिकाहं निजबोधरूपा ।।3।।

काश्यां हि काशते काशी

काशी सर्व प्रकाशिका।

सा काशी विदिता येन

तेन प्राप्ता हि काशिका ।।4।।

धुन : सा काशिकाहं निजबोधरूपा।

निज बोधरूपा संवित्स्वरूपा।।

श्रीमल्लिकार्जुन गीतम्

साम्बं भज हृदालम्बम्, ज्योतिर्लिंगात्मक-बिम्बम् ।।ध्रुव।।

भ्रमराम्बा भुवनाम्बा मनोहरं मधुरं हरम् ।।1।।

मल्लिका-वल्लरी-चूडं शशिखण्डापीडम् ।।2।।

पातालजे गंगाजले अभिषिक्तं श्रीगिरिसक्तम् ।।3।।

वन्देहं पापापहं हृतसंवित्साधकमोहम् ।।4।।

अर्द्धनारीश्वर भजन

अर्द्धनारीश्वरं भजे समं ब्रह्मघनं भजे।
सद्घन-चिद्घन-आश्लिष्टां भूमानन्दां उमां भजे ।।ध्रुव।।

अर्द्धनारीश्वररूपे सर्वान् देवान् प्रसादये।
व्यक्ताव्यक्तात्मकविश्वे व्याप्त-तत्त्वं विमर्शये
व्यक्ताव्यक्तातीत-पर-ब्रह्मस्पर्श उपास्महे ।।1।।

योगक्षेमात्मकचिंतां शिवानुरक्त्या संत्यजे।
शिवशक्यैक्यबोधेन सर्वान् बाधान् विसर्जये
शिवशक्यैक्यदृष्ट्यैव संविन्निष्ठां विवर्द्धये ।।2।।

वैद्यनाथ भजन

पूर्वोत्तरे प्रज्ज्वलिकाभिधाने,
सदावसंतं गिरिजासमेतम्।
सुरासुराराधित पादपद्मम्,
श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि।
श्रीवैद्यनाथं सततं स्मरामि।। (श्री शंकराचार्य कृत)

वैद्यनाथ स्वामी-भवरोगादवतु
ज्योतिर्लिंगभूतः चिताभूविजयतु ।।ध्रुव।।

हरिकर-प्रतिष्ठितं अष्टांगुलमस्तकम्
हार्दशक्तिपीठस्थं वन्दे पातालगम्
(वन्देष्ट सिद्धिदम्) ।।1।।

गांगयाम्यतीरे झारखण्डक्षेत्रे
हरीतकी-वनान्ते वैद्यनाथमाश्रये
(वैद्यनाथमाभजे) ।।2।।

कावरार्थि भं-भं नादपूरितालय
कामेश्वर हे गुरो शिष्यान् नः पालय
कामेश्वर संवित्-साधकान् पालय ।।3।।

वैद्यनाथ प्रार्थना

लिंङ्ग द्वादशान्तर्भूत
वैद्यनाथः पाहिमाम्।
सिद्ध चिताभूमि भूत
वैद्यनाथ रक्षमाम् ।।ध्रुव।।

भव मुक्ति हेतु भूत
वैद्यनाथ पाहिमाम्।
भक्तार्ति द्रवीभूत
वैद्यनाथ रक्षमाम् ।।1।।

साक्षात् कैलास भूत
वैद्यनाथ पाहिमाम्
संविज्ज्ञान गुरुभूत
वैद्यनाथ रक्षमाम् ।।2।।

महाकाल नाम स्मरण

अवन्तिकायां विहितावतारं, मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं, वन्दे महाकालमहासुरेशम्।।
(श्री शंकराचार्य कृत)

शंभो शंकर शशांक भाल।
शिव-शिव हर-हर जय महाकाल ।।ध्रुव।।

त्रिपुरसंहारि रुद्र कराल।
त्रिशूलधारि जय महाकाल ।।1।।

ज्योतिर्मय-शिवलिंग-विशाल।
उज्जयिनी-भव जय महाकाल ।।2।।

क्षिप्राविहारि फणि-मणि-माल।
कुम्भामृतझरि जय महाकाल ।।3।।

हरसिद्धीवर यति जन पाल।
संविदवन्तीश्वर महाकाल ।।4।।

विविध देवता कीर्तन

श्री वागीश्वरी भजन

हे ब्रह्ममयि माँ सरस्वती।
श्री पंचमी प्रकटी वागीश्वरी ।।ध्रुव।।

जन जीवन वसन्त शोभाझरी
तम-नाशकरी ज्ञान भास्करी ।।1।।

आगम-निगमालय-सुपूजिता
सुषुमनपथ-सरसिज-विराजिता ।।2।।

भारती चतुरानन-भामिनि।
संवित्साधक मन-प्रबोधिनि ।।3।।

श्री कृष्ण भजन

नन्दनन्दन घनश्याम मुकुन्द।
वन्दित मुनिजन संविदानन्द ।।ध्रुव।।

निगमान्तरचर वाचामगोचर।
नवनीतचोर ज्ञानमुद्राकर ।।1।।

मन्दस्मितानन मुनिमनमोहन।
खगपतिवाहन गजपतिमोचन ।।2।।

जय योगेश्वर विश्वरूपधर।
संविद्धाम मन्दिर पावन कर ।।3।।

नारायण जय नारायण

नारायण जय नारायण जय,
नारायण श्रीमन् नारायण "ध्रुव"
नारायण जय नारायण जय,
पुरूषोतम अरविन्द नयन।
नारायण जय, (2)
परमानन्द घन संविद घन, (1)

नारायण जय, (2)
सर्वान्तर तम श्रीरमण,
नारायण जय, (2)
संवित् परायण- दुखः हरण (2)

जय पुरुषोत्तम

जय पुरुषोत्तम त्रिलोक पालक
संवित् साधक-मोहनिवारक ।। ध्रुव ।।

जय नारायण कृष्ण जनार्दन
तुम हो भववृक्ष मूल कारण।
क्षर-अक्षर के परे प्रतिष्ठित
पुरुषोत्तम पद में हम आश्रित ।। 1 ।।

संग रहित मन विषय-विरत हो
तव पद ध्यान में नित्य निरत हो।
तुम हो शरणागत संरक्षक
श्री पुरुषोत्तम संवित् प्रकाशक ।। 2 ।।

सूर्य कीर्तन

भास्करं यजामहे प्रविष्टं उत्तरायणम्।
भर्गं पुष्टिविवर्धनं प्राणिनां परमायणम् ।।ध्रुव।।

सप्ताश्व-रथमारूढं गायत्रीप्राणवल्लभम्।
ज्योतिः पुंजं च वरेण्यं सवितारं नारायणम् ।।1।।

आदिदेवं महादेवं द्वादशात्मानमद्वयम्।
आरोग्यप्रदं आदित्यं अनात्मबुद्धिनिवारणम् ।।2।।

जगद्बीजं जगन्नेत्रं तेजोगात्रं दिवाकरम्।
संवित्साधक-मित्रवरं सर्वार्थसिद्धिकारणम् ।।3।।

पंचभूत शुद्धि

स्थूलशरीरः शुद्ध्यन्ताम् भूमिरहं लं स्वाहा।

प्राणशरीरः शुद्ध्यन्ताम् उदकमहं वं स्वाहा।

मनःशरीरः शुद्ध्यन्ताम् अग्निरहं रं स्वाहा।

बुद्धिशरीरः शुद्ध्यन्ताम् वायुरहं यं स्वाहा।

अहंकारः शुद्ध्यन्ताम् आकाशोहं हं स्वाहा।

आत्मा मे शुद्ध्यन्ताम् ब्रह्मरहं ॐ स्वाहा।

ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा।

आत्माब्रह्म ॐ ॐ

आत्माअखण्डः ॐ ॐ

आत्माआनन्दः ॐ ॐ

आत्मापूर्णः ॐ ॐ

ज्ञानेश्वर हनुमान भजन

जय हनुमान जय हनुमान।
जय जय ज्ञानेश्वर हनुमान।
संवित्धाम मन्दिर हनुमान ।।ध्रुव।।

आश्रित भय हर जय हनुमान।
अभय वर प्रद जय हनुमान।
अहंकार हर जय हनुमान ।।1।।

संकटमोचन जय हनुमान।
सतत् रामचिंतन हनुमान।
साधक संपूज्य जय हनुमान ।।2।।

सर्वगुणालय जय हनुमान।
सर्वजनप्रिय जय हनुमान।
संवित्तरुप्रिय जय हनुमान ।।3।।

शिष्य प्रार्थना

प्रार्थयन्तं सुप्रपन्नं, शिष्यं मोक्षाधिकारिणम्।
उपदेक्ष्यन्ति दृष्ट्यापि, त्वरया तत्त्वदेशिकाः ।।
(उपदेक्ष्यन्ति त्वरया, कृपया मौन देशिकाः)

मौनोपदेशं कुरु कृपया, मोक्षोपदेशं कुरु, त्वरया ।। ध्रुव ।।
यच्छ्रेयः स्यान् मम निश्चित्य ब्रूहि
त्वत्पादमूले पतितं मां पाहि।
धर्मोपदेशं कुरु भगवन्, सौख्योपदेशं कुरु,स्वामिन् ।।1 ।।

दीक्षां दिशात्मीयदृष्ट्या प्रबोधय
सुप्तात्मशक्तिं भक्तिं विवर्द्धय।
योगोपदेशं कुरु तपोमय, लक्ष्योपदेशं कुरु, तन्मय ।।2 ।।

पदत्रयातीत-ब्रह्मैक्य-बोधक
मात्रा-त्रयातीत-साक्षी-प्रकाशक।
वाक्योपदेशं कुरु श्रुतिधर, प्रणवोपदेशं कुरु,यतीश्वर ।।3 ।।

मौनोपदेशं मोक्षोपदेशं, धर्मोपदेशं सौख्योपदेशम्
योगोपदेशं लक्ष्योपदेशं, वाक्योपदेशं प्रणवोपदेशम्
ब्रह्मोपदेशं कुरु शिवतर, पूर्णोपदेशं कुरु, गुरुवर ।।4 ।।

अमृत सेतु

वह्निस्थानं शक्तिमूलं सद्ब्रह्मग्रन्थिभेदनम्।
वेदारं भुवनाधारं भुजंगशयनं भजे ।।1।।

विष्णुग्रन्थिविनिर्मुक्तं चिदादित्यं हृदम्बरम्।
द्वादशारमहापद्मं अनाहतालयंश्रये ।।2।।

भ्रुकुटी मध्यकूटस्थं रुद्ररोध विदारणम्।
द्विदलं चिन्तनातीतं आज्ञाकमलमाविशे ।।3।।

नमःशिवाय शान्ताय द्वादशान्ताय शम्भवे
संविदानन्दकन्दाय सोमायामृतसेतवे
संविद्गुरुस्वरूपाय सोमायामृतसेतवे ।।4।।

श्री वेदव्यास कीर्तन

सत्रे-सत्रे समाराद्ध्यः

साक्षात् सत्यवती सुतः ।।ध्रुव।।

सर्वशास्त्र विधायकः

भगवान् बादरायणः ।।

संस्कृते सूत्र धारकः

भारतानां परायणः ।।

वेदमार्ग प्रकाशकः

ब्रह्मविद्या प्रवर्तकः ।।

महाभारत बोधकः

संवित्-गुरु-गणनायकः ।।

वेदान्त चालीसा

(श्री शंकराचार्य कृत उपदेश पंचकम् का हिन्दी रूप)

सत्य सनातन वेद का श्रद्धा से नित पठन करें।
उसमें वर्णित स्वकर्म का भाव भरा आचरण करें।
वेदविहित कर्मों द्वारा परमेश्वर का भजन करें।
इह पर लोकफलप्रद काम्य कर्म का शमन करें।
कर्त्तव्य नित्य कर्मों से पापों का परिहार करें।
धर्म विषय के सुख में भी दोषों का सुविचार करें।
आत्म बोध को जीवन के लक्ष्य रूप से वरण करें।
देह गेह ममता तज कर मोक्ष-मार्ग आश्रयण करें ।।1।।

सत् पुरुषों सत्शास्त्रों से विधिपूर्वक नित संग करें।
भगवद् भक्ति दृढ करने शरण-वरण अवलम्ब करें।
शम-दमादि षट् संपत् का तत्पर हो संचयन करें।
''ब्रह्म कर्म से प्राप्य है'' इस मति का संहरण करें।
ब्रह्मनिष्ठ श्रुति-ज्ञाता की समित् पाणि हो शरण गहें।
प्रतिदिन श्रीगुरु चरणों की सेवा में संलग्न रहें।
ब्रह्म ज्ञानोपदेश की गुरुचरणों में अरज करें।
गुरुमुख से श्रुतिवाक्यार्थ सततश्रवण में सजग रहें ।।2।।

महावाक्य के अर्थों पर पुनः पुनः सुविचार करें।
वेदान्तपक्ष आश्रय ले सिद्धान्त परिष्कार करें।
दुस्तर्कों को दूर रख चिन्तन अविचल अमल करें।

श्रुति अनुसारी युक्ति से मनन साधना सबल करें।
"ब्रह्मस्वरूप मैं" ऐसी दिव्यभावना दृढ कर दें।
प्रतिदिन के व्यवहार में घमंड को नहीं अवसर दें।
देहात्मबुद्धि विषतरु के उन्मूलन में निरत रहें।
विद्वानों के साथ सदा वादविवाद से विरत रहें ।।3।।

क्षुधारूपी आजीवन की व्याधी का उपचार करें।
प्रतिदिन औषधि मानकर भिक्षा का आहार करें।
रसना के प्रिय भोजन की करें कभी नहीं याचना।
विधिवश प्राप्त भोजन से संतुष्टि अनुभव करना।
शीतोष्णादि द्वन्द्वों को समबुद्धि से सहन करें।
व्यर्थ वचन को त्याग कर वाणी का संयमन करें।
सर्वत्र व्यवहार में तटस्थभाव प्रयोग करें।
निग्रहानुग्रह करती लौकिक दृष्टि त्याग करें ।।4।।

संविन्मय एकान्त में सुखपूर्वक आसीन रहें।
लगा समाधि चित्त को परब्रह्म में लीन करें।
चिन्मात्र शुद्ध दृष्टि से पूर्णात्मा साक्षात करें।
उसकी सत्यानुभूति से बाधित भासित जगत् रहे।
अमाप संचित कर्मों को ज्ञान अनल से नष्ट करें।
आगामि कर्मों के साथ चितिबल से अस्पृष्ट रहें।
शरीर यापन मात्र से प्रारब्ध वेग क्षीण करें।
शरीर पात होने पर ब्रह्मरूप में लीन रहें ।।5।।

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय...

श्री वेदव्यास

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय ऋषिवर्य।

द्वैपायन मुनि पुंगव जय पाराशर्य।।

प्रस्थान त्रय दर्शक ब्रह्म विद्याचार्य।।

श्री शंकराचार्य

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय गुरुवर्य।

भारत राष्ट्रोद्धारक जय शंकराचार्य।।

सन्यासी कुलनायक जय संविदाचार्य।।

सिद्ध वटेश्वर

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय गुरुवरभो।

जय सिद्ध वटाद्यस्त दक्षिणमुख शंभो।।

जय रांजीपुर मन्दिर सिद्ध वटेश्वर भो।।

सूर्य

माम् प्रेरय मम पूरय माम् तारय श्री सूर्य।

जय सन्तसरोवर मन्दिर ज्ञानादित्य।।

जय संवित् साधक सेवित ज्ञानादित्य।।

श्री योगेश्वर कृष्ण

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय योगेश्वर।

जय गीतामृत वर्षक करुणामय घन सुन्दर।।

जय संवित् प्रांगण शोभित गीता ज्ञानेश्वर।।

भुवनेश्वरी

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय मातः।

पदकमलं तव सेवे प्रति सायं प्रातः।।

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय अम्ब।।

फलवृद्धिपुर - साधक - पूजित भुवनाम्ब।।

जय सविन् नगरीजन सेवित भुवनाम्ब ।।

अबुंदा देवी

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय अम्ब

जय अर्बुद कात्यायनि अधरा जगदम्ब।।

जय अर्बुद कन्दर मन्दिर पूजीत बिम्ब।।

सोमनाथ

माम् प्रेरय माम् पूरय माम् तारय शंभो।

जय अर्बुद संतसरोवर सोमेश्वर भो।।

जय संवित् साधक जीवन प्राणेश्वर भो।।

पुरुषोत्तम

मां प्रेरय मां पूरय मां तारय नारायण

जय केशव पुरुषोत्तम दीनोद्धार परायण।

जय पुरुषोत्तम संवित् साधक जीवन पूरण।।

संवित् साधना में भगवत् संकिर्तन का महत्व पूर्ण स्थान है। अनेक ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों ने इसी दृष्टि से संवित् साधना के उपयुक्त संकिर्तनों की स्वयं रचना की। यह रचनाऐं विशेष शब्दावली युक्त एवं विमर्शनीय विचार गर्मित होते हैं। इनमें भक्ति रस ज्ञान प्रकाश का मिश्रण है। इनका ही अनुकरण करते हुए, चुने हुए संकिर्तनों का विशेष प्रयोग संवित् साधनायना के उत्सव, शिविर, सत्र आदि अवसरों में होता है। इनको साधारण साधकों के प्रयोगार्थ यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

– स्वामी ईश्वरानन्द गिरि